Page No. : 27-30

SHODH GURU

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF EDUCATION

मन्नू भंडारी की कहानियों में सामाजिक संघर्ष और नारी चित्रण

डॉ.वंदना राणा,
सहायक आचार्या, हिंदी
राजकीय महाविद्यालय, ढलियारा

शोध सारांश

मन्नू भण्डारी हिन्दी साहित्य की प्रसिद्धकहानीकार एवं उपन्यासकार है। इनकेकथा-साहित्य में आधुनिकता का एक नयापनस्पष्ट दिखाई देता है। इन्होंने आम मनुष्य कीपीड़ा को बहुत ही गहराई से समझा है। अतःस्त्रियों को संघर्ष का एक नया मार्ग दिखाया है,भले ही वह परिवार के बीच हो या समाज केबीच, अपने लिए संघर्ष की नींव को हमेशाउज्ज्वेलित करना सिखाया है। मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य में भारतीय नारी की विविध स्थितियों को चित्रित किया गया हैं। नारी की समस्याएं आज भी हैं, जिनसे मुक्ति मिलने का प्रयास नारी कर रही है। जब नारी अपनी विविध स्थितियों में अपने अस्तित्व और अस्मिता को सुरक्षित रख सकेगी, तभी उसे गरिमा प्राप्त होगी। नारी विमर्शकारों में मन्नू भण्डारी का नाम उल्लेखनीय है। वह नारीवादी विमर्शकारों से अलग विचार रखती है। इनके कथा साहित्य में नारी विमर्श के अनेक सोपनों को उठाया गया है। नारी विमर्श में यौन स्वतंत्रता का मन्नू भण्डारी विरोध करती है। नारी की आर्थिक स्वतंत्रता ने उसके सम्बन्धों को बदल दिया है। वर्तमान समय में मन्नू भण्डारी के साहित्य में नारी के स्वरूपों को बताया गया है।

मुख्य शब्द: कथा-साहित्य, नारीवादी, विमर्शकारों, नारी विमर्श आर्थिक स्वतंत्रता।

प्रस्तावना

मन्नू भण्डारी एक भारतीय लेखिका रही है, जो विशेषतः 1950 से1960 के बीच अपने कार्यों के लिए जानी जातीरही है। सबसे ज्यादा वह अपने दो उपन्यासों केलिए प्रसिद्ध रही-पहला 'आपका बंटी' और दूसरा'महाभोज'। नयी कहानी अभियान और हिंदीसाहित्यिक अभियान के समय में लेखक निर्मलवर्मा, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, कमलेश्वरइत्यादि ने इन्हें अभियान की सबसे प्रसिद्धलेखिका बताया था।

सदियों से पराधीन रही नारी की स्वतंत्रताकी चाह को नारीवादी आंदोलन की संज्ञा मिली है। अपने आरंभिक काल में चले आंदोलन कोपुरुष विरोधी आंदोलन के रूप में देखा गया। परन्तु बाद में स्पष्ट हुआ कि यह आंदोलन पुरुषविरोधी न होकर व्यवस्था विरोधी आंदोलन है,जिसके तहत स्त्री का शोषण की मांग है।परिवर्तन उस व्यवस्था में होना चाहिए अथवा उसमानसिकता में होना चाहिए जो नारी को गुलामबनाए हुए हैं। नारीवाद स्त्री को वस्तु से व्यक्तिबनाने की कोशिश का परिणाम है। इस संदर्भ में'औरत के हक' में की लेखिका तस्लीमा नसरीनकहती हैं-"जिस दिन समाज स्त्री शरीर का नहीं,

उसकी मेधा और श्रम का मूल्य देना सीख जाएगासिर्फ उस दिन स्त्री मनुष्य के रूप में स्वीकृतहोगी।" वैश्विक धरातल पर दृष्टिपात करें तोसहज ही ज्ञात होता है कि नारी युगों से पुरुषद्वारा संचालित रही है।

मन्नू भंडारी की कहानियों में सामाजिक संघर्ष और नारी

मन्नू भण्डारी हिन्दी की वरिष्ठ कहानीकार एवं उपन्यासकार है। उनका पहला कहानी संग्रह 'मैं हार गई' 1957 में प्रकाशित हुआ। इनके कईकहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनका लेखनकार्य निरंतर जारी रहा। मन्नू भण्डारी कीकहानियों में नारी के कई रूप चित्रित होते हैं।इनकी स्त्रियों में कुछ परम्परागत है तो कुछपढ़ी-लिखी, कामकाजी और एक विशिष्ट-वर्ग कीनारियाँ हैं। ऐसी विशिष्ट वर्ग की नारियाँ अपनेअस्तित्व, व्यक्तित्व की रक्षा और प्रतिष्ठा कोलेकर सजग है। वह न केवल पुरुष कीअद्वितीयता का अविष्कार करती है बल्कि सहीमायानों में से उसे चुनौती भी देती हैं।

मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानियों में ऐसी कई स्त्रियाँ गढ़ी हैं, जो घोर व्यक्तिवादी, स्वतंत्र और अपने वैयक्तिक विकास में विवाह को बंधन स्वीकार करने वाली है। उनमें'जीती बाजी की हार' 'आते-जाते यायावर', 'घुटन की प्रतिमा', 'नई नौकरी' की रमा आदि उल्लेखनीय है। 'जीती बाजी' की मुरला को आत्मनिर्भरता के कारण किसी के साथ की जरूरत महसूस नहीं होती। 'घुटन' एक विशिष्ट कहानी है। इसमें मन्नू भण्डारी ने दो ऐसी नारियों की व्यथा-कथा को वाणी दी है, जो परस्पर विरोधी कारणों से व्यथित है। प्रतिमा विवाहित है।उसका पति नेवी में इंजीनियर है। वह जब घर जाता है। तब खूब शराब पीकर प्रतिमा को अपनी बाहों में जकड़ लेता है। प्रतिमा उस जकड़ से मुक्त होने के लिए छटपटाती है। प्रतिमा की यह छटपटाहट घुटन में बदल सकती है। परन्तु मुक्ति में नहीं। दूसरी तरफ मोना की शादी नहीं हुई। वह अपने प्रेमी अरुण से शादी करना चाहती है, परन्तु मोना की माँ नौकरी शुदा मोना की शादी नहीं होने देती। वह मोना की शादी करके अपने आर्थिक हालत बिगाड़ना नहीं चाहती। ऐसे में मोना किसी की बाहों भी में जकड़ जाने के लिए छटपटाती है। कहीं न कहीं छटपटाहट में प्यार की मुक्ति तलाशती नारी है, जो बंधन नहीं चाहती। नई नौकरी में रमा अध्यापिका थी। पढ़ना-पढ़ाना उसका शौक था। पति की प्राईवेट फर्म की नई नौकरी के कारण उसे अपनी नौकरी छोड़नी पड़ती है। पति की यह नई नौकरी उसके अस्तित्व और व्यक्तितत्व को उसकी इच्छा, आकांक्षा को बौद्धिक विकास को निगल जाती है। ऐसे में ऐशो आराम भरी जिन्दगी के बावजूद वह संतुष्ट नहीं है।

इसी प्रकार कहानी-'आते-जाते यायावर' की मिताली कॉलेज में पढ़ाती है। हॉस्टल में रहती है। बहुत पहले उसका सहपाठी प्रेम के नाम पर संस्कार तोड़ने के बहाने उसे छल चुका है। ऐसे में वैचारिक रूप से पुरुष के प्रति प्रतिशोध की भावना होते हुए भी यायावर किस्म के नरेन से फिर छली जाती है। पुरुष परंपरागत संस्कारों के नाम पर भी नारी से छल-कपट करता है, तो भी आधुनिकता के नाम पर भी। इसी को मन्नू भण्डारी ने कहानी में उजागर किया है, कि आते-जाते यायावर किस तरह नारी का शोषण करते है, परन्तु नारी यहाँ आधुनिक होने के नाते संबंध बनाने में हिचक उत्पन्न नहीं होने देती। लेकिन लेखिका ने पुरुष के लिए इस छल-कपट से आक्रोश उत्पन्न करती है।

नारीवादी दृष्टिकोण मन्नू भण्डारी की ऊँचाई और 'यही सच है' कहानियों में तीव्र रूप से व्यक्त हुआ है। 'ऊँचाई' कहानी की शिवानी एक ऐसी नारी है, जो एक ही समय पर पत्नी और प्रेमिका दोनों भूमिका अदा करती है। यहाँ एक आधुनिक नयापन दिखाई देता है। विवाहेत्तर संबंध रखकर यदि पुरुष अपवित्र नहीं होता तो स्त्री कैसे हो सकती है और पवित्रता का संबंध शरीर से नहीं मन से होता है। ऐसा कहने वाली पात्र शिवानी अपने पूर्व प्रेमी अतुल के साथ उसके शारीरिक संबंध को न तो अनुचित मानती है,

नअनैतिक। यह आधुनिक नारी का नयापन अर्थात् एक से अधिक पुरुषों से संबंध रखते हुए भीस्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व की ऊँचाई पर रह सकती है।

'यही सच है' कहानी की दीपा पात्र भी परम्परागत मूल्य को आघात पहुँचाकर नारी को नये रूप में प्रस्तुत करती है। दीपा एक समय निशीथ से प्रेम करती है तो निशीथ से धोखा मिलने पर फिर वह संजय से प्रेम करने लगती है। परन्तु नौकरी के लिए इन्टरव्यू देने गई दीपा को निशीथ से पुनः मुलाकात होती है और वह फिर से उससे प्रेम का अनुभव करती है।

पारम्परिक मान्यताओं के दायरे से बाहर निकलने का प्रयास करने वाली दीपा सचमुच एक विद्रोही युवती है। भण्डारी जी ने यहाँ नारी को बंधा हुआ नहीं दिखाया है, उनमें अपने लिए भावुकता को जन्म दिया है, जो कई संबंधों को बनाने में अनैतिक नहीं समझती।

'दीवार बच्चे और बरसात' कहानी की नायिका अपने स्वतंत्र व्यक्ति पर पति द्वारा आँच आते देखकर शादी के रिश्ते को तोड़ देती है, क्योंकि कहीं न कहीं वह सब समझ जाती है, कि उसकी स्वतंत्रता। उसका जीवन नष्ट हो सकता है।

'हार' कहानी की दीपा राजनीति केक्षेत्र में पुरुष के एकाधिकार को तोड़कर नारी कीश्रेष्ठता सिद्ध करती है। क्योंकि वह बंधनों मेंबंधकर रहने वाली नारी नहीं बनता चाहतीइसलिए पुरुष के वर्चस्व, को तोड़ती है।

'कमरा और कमरे कहानी में नारी के दबे व्यक्तित्व को चित्रित करती है। समाज में नारी को परित्यक्ता और विधवा का अभिशाप भोगना पड़ता है. पुरुष को नहीं। परिवार भारतीय समाज की आधारभूत इकाई है। परिवार वह सेतु है जो व्यक्ति को समाज अथवा समाज को व्यक्ति से जोड़ता है। परिवार में ही व्यक्ति के विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों की नींव है नारी पुरुष मन्नू भण्डारी 'आपका बंटी' उपन्यास के केन्द्र में परिवार है और इसमें परिवार के टूटने से बच्चे के जीवन में अकेलेपन की समस्या के साथ-साथ नारी के संघर्ष एवं टूटने की पीड़ा को भी चित्रित किया गया है। मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में संयुक्त परिवार व्यवस्था की कमियों की अभिव्यक्ति आकाश के आइने में नामक कहानी में की गई है मन्नू भण्डारी ने छत बनाने वाले और अंकुश कहानी में संयुक्त परिवारों के विखण्डन और एकल परिवारों के निर्माण की समस्याओं को चित्रित किया है। आज की नारी चेतना से सम्पन्न नारी एकल परिवार को महत्व देती है, लेकिन उसमें भी अनेक विसंगतियाँ है. एकाकीपन है। इस व्यवस्था में भी नारी को वह स्थान नहीं मिल पाया है, जिसका वह अधिकार रखती है।

'यही सच है' कहानी में हावड़ा स्टेशन के प्लेटफार्म का अत्यन्त सहज स्वाभाविक चित्रण किया है। मन्नू भण्डारी को ग्रामीण जीवन की अपेक्षा शहरी जीवन में अधिक स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व भाव दिखाई देता है। समाज और संस्कृति के निर्माण में पुरूष अपना वर्चस्व स्थापित कर नारी को अपने अधीन कर लेता है, और नारी इसे अपनी नियति मान लेती है। भारतीय समाज में वर्चस्व की संस्कृति जाति व्यवस्था में निहित है।

भारतीय समाज में नारी की कोई पहचान नहीं है, विवाह पूर्ण उसकी पहचान पिता से, विवाह के बाद पति से और अंत में पुत्र से जुड़ जाती है। आज नारी ने अपने स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व के लिए के लिए प्रतिरोध करना प्रारम्भ कर दिया है, जो उसकी जागरूकता का सूचक है। आधुनिक शिक्षित नारी के लिए प्रेम न गुप्त है और न पाप । आधुनिक नारी संस्कृति, समाज के बंधन की मानसिकता का विरोध करती है मन्नू भण्डारी की कहानी 'त्रिशंकु में समाज व्यवस्था के विरूद्ध प्रतिरोध है।" मैं हार गई कहानी में राजनैतिक व्यवस्था के प्रति प्रतिरोध है। 'आपका बंटी उपन्यास की नारी पात्र शकुन ने शोषण एवं उत्पीड़न के प्रति प्रतिरोध व्यक्त किया है। एक इंच मुस्कान' उपन्यास में विवाह के लिए

गीरा प्रतिरोध है। ईसा के घर इंसान कहानी की एजिला धर्म के नाम पर होने वाले स्त्री शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध करती है तथा अन्याय के लिए चर्च और फादर का भंडाफोड़ करती है।"

निष्कर्ष

मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी का संघर्ष अपनी स्वतंत्रता के रूप में नयापन लिए हुए है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कुल मिलाकर देखे तो मन्नू भण्डारी नारीवादी आंदोलन से जुड़ी हुई लेखिका है। इसके बावजूद नई शिक्षा और सामाजिक विकास के कारण इनकी कहानियों में व्यक्तित्व चेतना से भरी हुई नारियों का भरमार है। 'स्व' की रक्षा के लिए वह नारियाँ संबंधों को तोड़ने का जोखिम भी उठाती है। इस तरह इनमें एक नयापन दिखाई देता है। नारी का दोयम दर्जा उन्हें स्वीकृत नहीं है। पुरुष केद्रित सोच को भले ही वह मिटा नहीं सकती परन्तु उसके सामने प्रश्न चिह्न तो अवश्य खड़ा करती है। अथवा यह कहा जा सकता है कि उस सोच को उखाड़ फेकने के लिए वह निरंतर प्रयत्नशील दिखाई देती है। अपने इसी प्रयत्न के चलते कई बार परिवार और समाज से संघर्ष करती हुई टूटती है। तो कई बार अपने आपको स्थापित भी करती है। सचमुच मन्नू भण्डारी नारी जीवन के नए भाव-बोध को आलेखन करने वाली सशक्त कहानीकार है। जिन्होंने स्त्रियों के मन में उनके जीवन में नया-संघर्ष अपने अस्तित्व के लिए उत्तेजित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1-आर.एस. सिंह, मन्नू भारतीय साहित्य, पृ. 133
2-वही, पृ. 150
3-मन्नू भण्डारी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, (घुटन-कहानी) पृ. 6
4-वही-कहानी (नई नौकरी), पृ. 12
5-आर.एस. सिंह, मन्नू भारतीय साहित्य, पृ. 152
6-मन्नू भण्डारी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ (कहानी-आते जाते यायावर)
7-मन्नू भण्डारी, दस प्रतिनिधि कहानिया, बंद दराजों का साथ (कहानी), पृ. 26
8-वही, एक बार और (कहानी), पृ. 38
9-वही, तीन निगाहों की एक तस्वीर (कहानी), पृ. 42